

J. Krishnamurti Washington D.C. 2nd Public Talk 21st April 1985	वाशिंगटन वार्ताएं (दूसरी वार्ता)
<p>1 May we continue where we left off yesterday. We were talking about fear and the ending of fear. And also we were talking about the responsibility of each one of us facing what is happening in the world, the appalling, frightening mess we are in. And for that we are all responsible, individually, collectively, nationally, religiously, and all the affairs of the world we have made after millennia upon millennia, long evolution, we have still remained barbarians, hurting each other, killing each other, destroying each other. We have had freedom to do exactly what we liked and that has created havoc in the world. Freedom is not to do what one likes, but rather to be free from all the travail of life, from the problems, which we went into yesterday morning, from our anxieties, from our psychological wounds, from all the conflict that we have put up with for many many many millennia. And also to be free from fear. We talked about all these things yesterday afternoon.</p>	<p>क्या हमलोग वहीं से अपनी चर्चा पुनः आरंभ करें जहां उसे कल छोड़ा था? हमलोग कल भय और उसका अंत करने के विषय में चर्चा कर रहे थे। हम संसार में जो कुछ घटित हो रहा है, प्रत्येक व्यक्ति जिसका सामना कर रहा है, जिस भीषण और भयावह अव्यवस्था में हम हैं उसके प्रति हममें से हर एक के उत्तरदायित्व की भी चर्चा कर रहे थे। इस संसार को जिस स्थिति में हमने पहुंचाया है उसके लिए हम सभी व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से तथा राष्ट्रीय एवं धार्मिक रूप से उत्तरदायी हैं। सहस्रों वर्षों के बाद भी हम बर्बर बने हुए हैं - एक-दूसरे को चोट पहुंचाते हुए, एक-दूसरे की हत्या करते हुए, एक-दूसरे का सर्वनाश करते हुए। हमारे पास यह स्वतंत्रता थी कि हम जो चाहे बिल्कुल वहीं करें और इसने संसार में तबाही मचा दी। स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि जो चाहो सो करो बल्कि इसका अर्थ है मुक्त हो जाना जीवन के समस्त संघर्षों से, हमारी समस्याओं से, हमारी चिंताओं से, हमारे भय से, हमारे मनोवैज्ञानिक घावों से तथा उन समस्त द्वंद्वों से जिन्हें हम हजारों वर्षों से सहन करते आये हैं।</p>
<p>2 And also we said these gatherings, this meeting is not a lecture on any particular subject, to inform, to instruct, to put it into a certain pattern. But rather it is our responsibility, together, to investigate, to explore into all the problems of our life, our daily life. Not some speculative concepts or philosophies, but to understand the daily pain, the boredom, the loneliness, the despair, the depression, and the endless conflict which man has lived with. structure of our being, of our existence.</p>	<p>और हमने यह भी कहा था कि यह कोई ऐसी सभा नहीं है जहाँ आपको किसी विशेष विषय पर जानकारी और शिक्षा देने के लिए व्याख्यान दिया जाए। बल्कि यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम मिलजुल कर अपने दैनिक जीवन की सभी समस्याओं की जाँच-पड़ताल करें, छानबीन करें - कोई सैद्धांतिक अवधारणा या दर्शन नहीं बल्कि अपने दैनिक जीवन की समस्त पीड़ा, ऊब, अकेलापन, निराशा, उदासी और उस अंतहीन द्वंद्व को समझना जिसके साथ मनुष्य जीता आया है।</p>
<p>And this morning we have to cover a great deal of ground. And also we pointed out yesterday this is not a meeting in which the speaker stimulates you intellectually, emotionally, or in any other way. We depend a great deal on stimulation; it's a form of commercialism: drugs, alcohol, and all the various means of sensation. And we want also not only sensation but excitement, stimulation. So this is not</p>	<p>आज सुबह हमें बहुत सी अन्य बातों पर भी चर्चा करनी है। कल हमने संकेत दिया था कि यह ऐसी सभा नहीं है जिसमें कि वक्ता आपको बौद्धिक या भावनात्मक या किसी और ढंग से उत्तेजित करे। हम उत्तेजन पर बहुत अधिक निर्भर हैं; यह एक तरह की व्यावसायिकता है - मादक द्रव्य, शराब तथा संवेदन के अन्य सभी साधन। और हम केवल संवेदन नहीं बल्कि उत्तेजना भी चाहते हैं। परंतु यह उस तरह की</p>

<p>that kind of meeting. We are together to investigate our life, our daily life; that is, to understand oneself, what one is actually, not theoretically, not according to some philosopher or some psychiatrist, and so on. If you can put aside all that and look at ourselves actually, what we are, and not get depressed or elated, but to observe, which is to understand the whole psychological</p>	<p>सभा नहीं है। हम यहाँ पर इसलिए हैं कि हम मिलजुल कर अपने दैनिक जीवन की जाँच-पड़ताल करें, जिसका अर्थ है स्वयं को समझना, हम जो वस्तुतः हैं उसे समझना - सैद्धांतिक रूप से नहीं, किसी दार्शनिक या किसी मनोचिकित्सक के अनुसार नहीं। यदि हम सबको एक ओर रख कर अवलोकन करें, स्वयं को देखें वस्तुतः जो हम हैं, और स्वयं को देखते हुए न हम उदास हों और न उत्साहित हों तो हम अपने आपके, अपने अस्तित्व के संपूर्ण मनोवैज्ञानिक ढाँचे को समझ पाएंगे।</p>
<p>3 And we talked about it yesterday as one of the things that human beings go through all their life, is a form of fear. And we went into it very carefully: that time and thought are the root of fear. We went into that, what time and thought is. Time is not only the past, the present and the future, but in the now, in the present, all time is contained. Because what we are now we will be tomorrow unless there is a great, fundamental mutation in the very psyche itself, in the very brain cells themselves. We talked about it.</p>	<p>कल हमने यह भी कहा कि मानव अपने जीवन में जिन अनेक स्थितियों से गुजरता है उनमें से एक भय है। अत्यंत सावधानीपूर्वक इसकी छानबीन करते हुए हमने पाया कि समय और विचार ही भय के मूल हैं। समय और विचार क्या है, इसकी भी छानबीन हमने की। समय केवल अतीत, वर्तमान और भविष्य नहीं है बल्कि यह एक क्षण में भी है। वर्तमान में संपूर्ण समय समाहित है क्योंकि इस क्षण हम जो कुछ हैं वही कल भी होंगे जब तक कि हमारे संपूर्ण मानस में ही यानी हमारे मस्तिष्क की कोशिकाओं में ही एक महान् मौलिक परावृत्ति (म्यूटेशन) न घटित हो जाए।</p>
<p>4 And we also should talk this morning, talk over this morning together - please, one may point out, you and the speaker are taking a journey together, a long, complicated journey. And to take that journey one mustn't be attached to any particular form of belief. Then that journey is not possible. Or to any faith, or to some conclusion or ideology, or concepts. It's like climbing the Everest or some of the great, marvellous mountains of the world; one has to leave a great deal behind, not carry all your burdens up the steep hills, mountains. So in taking the journey together - and the speaker means together, not that he is merely talking and you agreeing or disagreeing; if we could put those two words aside completely, then we can take the journey together. Some may want to walk very rapidly or the others may lag behind, but it is a journey all the same together.</p>	<p>मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि आप और वक्ता साथ-साथ एक यात्रा कर रहे हैं - एक लंबी और जटिल यात्रा। ऐसी यात्रा करने के लिए हमें किसी तरह के विश्वास, आस्था, निष्कर्ष, विचारधारा या किसी अवधारणा से बँधे नहीं रहना चाहिए क्योंकि तब यह यात्रा संभव नहीं है। यह तो एवरेस्ट की चोटी या संसार के किसी अन्य विशाल, अद्भुत पर्वत शिखर पर चढ़ने जैसा है; हमें बहुत कुछ पीछे छोड़ देना पड़ेगा, क्योंकि अपने सारे बोझ को ढोते हुए हम पहाड़ की खड़ी चढ़ाई नहीं चढ़ सकते। अतः यह यात्रा साथ-साथ करते हुए और वक्ता का कहना है साथ-साथ, न कि वह बोल रहा है और आप सिर्फ सहमत या असहमत हो रहे हैं, यदि हम इन दो शब्दों को पूर्णतः अलग रख दें, तो वास्तव में हम यह यात्रा साथ-साथ कर सकते हैं। संभव है कि कुछ लोग तीव्रगति से चलना चाहें और कुछ लोग थोड़ा धीरे, लेकिन यह यात्रा साथ-साथ की जा रही है।</p>
<p>5 We ought also to talk over together why human beings have always pursued pleasure as opposed to</p>	<p>हमें इस पर भी मिलजुल कर चर्चा करनी चाहिए कि</p>

<p>fear. We've never investigated what is pleasure, why we want everlasting pleasure in different ways: sexual, sensory, intellectual, the pleasure of possessions, the pleasure of acquiring a great skill, the pleasure that one derives from having a great deal of information, knowledge. And the ultimate gratification is what we call god. As we said, please don't get angry or irritated or want to throw something at the speaker. (Laughter) This is a violent world. If you don't agree they'll kill you. This is what is happening. And here we're not trying to kill each other, we're not doing any kind of propaganda or convinc[ing] you of anything.</p>	<p>मनुष्य ने क्यों सदा सुख की खोज की है। हमने अभी तक इस विषय की छानबीन नहीं की है कि सुख क्या है तथा विभिन्न ढंगों से हम स्थायीय सुख क्यों चाहते हैं - कामवासना का सुख, संवेदनात्मक और बौद्धिक सुख, स्वामित्व का सुख, कोई महान् दक्षता प्राप्त करने का सुख तथा वह सुख जो हम जानकारी और ज्ञान हासिल करने से पाते हैं एवं अंततः जिसे हम ईश्वर कहते हैं, उसकी प्राप्ति की तुष्टि है। कृपया क्रुद्ध या क्षुब्ध न हों और न वक्ता पर कुछ फेंकने की इच्छा करें। यह एक हिंसक दुनिया है। यदि आप दूसरों से सहमत न हों तो वे आपको मार डालते हैं। यही हो रहा है संसार में। यहां हम एक-दूसरे की हत्या करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। यहाँ हम किसी तरह का मत-प्रचार नहीं कर रहे हैं और न ही आपसे कोई बात मनवाने की कोशिश कर रहे हैं।</p>
<p>6 But we are going to face the truth of things, not live in illusions. And without illusions it's very difficult to observe. If you are deluding yourself and not facing actualities, then it becomes impossible to look at oneself as one is. But we like delusions, illusions, every form of deception, because we are frightened to look at ourselves. As we said, to look at ourselves very clearly, accurately, precisely, it's only possible in a mirror of relationship; that's the only mirror that we have. When you look at yourself when you're combing your hair or shaving or doing whatever you are doing to your face - sorry. (Laughter) You look at your mirror - sorry - (K laughs - more laughter) (K laughs - laughter and applause) - when you are shaving you look at your face or comb your hair; that mirror reflects exactly what you are, your face is, how you look.</p>	<p>लेकिन हम वस्तुस्थिति की सत्यता का सामना करने जा रहे हैं, भ्रांतियों में जीने नहीं। भ्रांतियों के रहते हुए अवलोकन करना बहुत कठिन है। यदि आप स्वयं को भ्रमित कर रहे हैं और वास्तविकताओं को सामना नहीं कर रहे हैं तो यह असंभव है कि आप स्वयं के असली रूप को देख पाएं। परंतु हमें भ्रम, भ्रांति और हर प्रकार का धोखा पसंद है, क्योंकि स्वयं को देखने में हमें भय लगता है। स्वयं को स्पष्ट रूप से, सही-सही और ठीक-ठीक देखना संबंधों के आईने में ही संभव है - यही एक मात्र आईना हमारे पास है। जब आप अपने बाल संवारते समय, दाढ़ी बनाते समय या किसी भी समय आईने में अपना चेहरा देखते हैं तो आईना बिल्कुल वही दिखाता है जो आप वस्तुतः दिखाई पड़ते हैं।</p>
<p>7 And psychologically is there such a mirror in which you can see exactly, precisely, actually what you are? As we said, there is such a mirror which is one's relationship, however intimate it be, whether it's man, woman; in that relationship you see what you are if you allow yourself to see what you are. You see how you get angry, your possession, all the rest of it.</p>	<p>मनोवैज्ञानिक रूप से क्या कोई ऐसा आईना है जिसमें आप स्वयं को ठीक-ठीक उसी रूप में देख सकते हैं जैसे कि आप वस्तुतः हैं? जैसा कि हमने कहा, एक ऐसा आईना है जो है आपके संबंध चाहे वे कितने ही अंतरंग हों, चाहे वह एक पुरुष के साथ हों या एक स्त्री के साथ। संबंध के इस आईने में आप स्वयं को जैसे आप वास्तव में हैं, देख सकते हैं, यदि आप अपने को यह देखने दें कि आप वस्तुतः क्या हैं। आप देखते हैं कि आपको कैसे क्रोध आता है, दूसरों</p>

	पर आपकी स्वामित्व की भावना, इत्यादि।
8 So pleasure man has pursued endlessly in the name of god, in the name of peace, and in the name of ideology and the pleasure of power, having power over others, political power. Have you noticed power is an ugly thing, when one dominates another, in any form: when a wife dominates the husband or the husband dominates the woman. Power is one of the evil things in life. And pleasure is the other side of the coin of fear. When one understands deeply, profoundly, seriously the nature of fear (as we went into it yesterday we won't go into it again), then pleasure, that is delight, seeing something beautiful, seeing the sunset or the morning light, the dawn, the marvellous colours, the reflection of the sun on the waters, that's a delight. But we make that as a memory and cultivate that memory as pleasure.	मनुष्य ने ईश्वर के नाम पर, शांति के नाम पर, विचारधारा के नाम पर सुख की अंतहीन खोज की है। शक्ति का भी एक अपना सुख है - दूसरों पर अधिकार, राजनीतिक शक्ति। क्या आपने इस पर ध्यान दिया है कि शक्ति यानी जब कोई व्यक्ति किसी पर किसी रूप में प्रभाव जमाता है, भद्दी चीज है? शक्ति जीवन की बुराइयों में से एक है। और भय का जो सिक्का है उसका दूसरा पहलू सुख है। जब कोई गहराई से, गहनता से, गंभीरता से भय के स्वरूप को समझ लेता है (इस विषय में हमने कल चर्चा कर ली है, अतः आज नहीं करेंगे) तो सुख आनंद का रूप ले लेता है। किसी सुन्दर वस्तु को देखना, सूर्यास्त को, सुबह के प्रकाश को, उषा को, अद्भुत रंगों को या जल में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखना - सो ही आनंद है। लेकिन इसकी स्मृति को हम सुख के रूप में संजोते हैं।
9 And also, as we said - but just look at it, not do something about it. I don't know if you have gone into the question of action. What is action? We're all so active from morning 'til night, not only physically but psychologically, the brain everlastingly chattering, going from one thing to another endlessly, during the day and during the night, the dreams, the brain is never at rest, it's perpetually in motion. I do not know if you have gone into that question of action. What is action, the doing? The very word 'doing' is the present, it's not having done or will do. Action means the doing now, correctly, accurately, completely, holistically - if I can use that word - action that is whole, complete, not partial. When action is based on some ideology, it's not action, is it? It's conformity to a certain pattern which you have established and therefore it's incomplete action or according to some memory, some conclusion. If you act according to [a] certain ideology, pattern or conclusion, it is still incomplete; there is a contradiction in all this. So one has to inquire into this very complex problem of action.	मुझे मालूम नहीं कि आपने कर्म के प्रश्न की कभी छानबीन की है या नहीं। कर्म क्या है? हम सुबह से रात तक बिल्कुल कर्मरत रहते हैं, न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी, हमारा मस्तिष्क निरंतर बकबक करता रहता है, अंतहीन रूप से एक विषय से दूसरे विषय की ओर दौड़ता रहाता है। न केवल दिन में बल्कि रात में भी सपनों के दौरान हमारा मस्तिष्क कभी शांत नहीं रहता, वह सतत गतिशील रहता है। अतः कर्म 'करना' क्या है? 'करना' शब्द ही वर्तमान में है - ऐसा नहीं कि जो 'किया' या 'करूँगा'। कर्म का अर्थ है वह जो तत्क्षण किया जा रहा है - सम्यक् रूप से, समग्र रूप से, अखंड रूप से। कर्म अर्थात् वह जो अखंड और पूर्ण है, आंशिक नहीं। कर्म जब किसी विचारधारा पर आधारित होता है तो वह कर्म नहीं होता। क्या वह कर्म होता है? तब वह आपके द्वारा स्थापित किसी ढाँचे विशेष का अनुसरण किसी स्मृति या निष्कर्ष के अनुसार किया हुआ होता है, इसलिए वह आंशिक कर्म है। इसमें एक विसंगति है। अतः कर्म की इस अत्यंत जटिल समस्या की हमें छानबीन करनी होगी।
10 Is action related to disorder or to order? You understand? We live in disorder, our life is disorderly, confused; contradictory: saying one thing, doing	कर्म का संबंध अव्यवस्था से है या व्यवस्था से? आप समझ रहे हैं? हम इस अव्यवस्था में जीते हैं, हमारा

<p>another; thinking one thing and quite the opposite in our actions. So what is order and disorder? Perhaps you have not thought about all these matters, so let us think together about all this, and look, please don't let me talk to myself. It's still early in the morning and you have a whole day in front of you; so let us be aware together of this question: what is order and what is disorder and what is the relationship of action to order and disorder?</p>	<p>जीवन अव्यवस्थित और भ्रमित है, विसंगतिपूर्ण है कहना कुछ, करना कुछ और, सोचना कुछ और करना ठीक उसके विपरीत। अतः व्यवस्था और अव्यवस्था क्या है? शायद आपने इन सब बातों पर कभी विचार नहीं किया है, अतः हम मिल जुल कर इन पर विचार करें न कि मैं अपने आपसे ही बात करता रह जाऊँ। अभी तो सुबह हुई ही है और आपके सामने पूरा दिन पड़ा है, अतः हम साथ-साथ इस प्रश्न को देखें व्यवस्था क्या है तथा अव्यवस्था क्या है और कर्म का व्यवस्था एवं अव्यवस्था से क्या संबंध है?</p>
<p>What is disorder? Look at the world if you will; the world is in disorder. Terrible things are happening. Very few of us know actually what is happening in the scientific world, in the world of the art of war, and all the terrible things that are happening in Russia; and the poverty in all countries, the rich and the terribly poor; always the threat of war, one political group against another political group. So there is this tremendous disorder. That's an actuality, it's not an invention or an illusion. And we have created this disorder, because our very life, living, is disorderly. And we are trying socially to bring about order, through all the social reforms and so on, so on. Without understanding and bringing about the end of disorder, we try to find order. It's like a confused mind trying to find clarity. A confused mind is a confused mind, it can never find clarity. So can there be an end to disorder in our life, our daily life? Not order in heaven or in another place, but in our daily life can there be order? The end of disorder, and when there is the end of disorder there is naturally order. That order is living, it's not according to a certain pattern or a mould.</p>	<p>अव्यवस्था क्या है? कृपया आप संसार को देखिए; संसार अव्यवस्थित है। भयंकर बातें हो रही हैं। हममें से बहुत कम ही लोग उन बातों को जानते होंगे जो वैज्ञानिक क्षेत्र में और युद्ध-कला के क्षेत्र में हो रही हैं तथा जो भयंकर घटनाएं अन्य देशों में हो रही हैं, अनेक देशों में व्याप्त गरीबी, धनी और गरीब के बीच बढ़ती हुई खाई, युद्ध के मँडराते बादल, एक राजनीतिक दल का दूसरे राजनीतिक दल के साथ वैरभाव। अतः हर जगह घोर अव्यवस्था है। यह एक वास्तविकता है, कोई कल्पना या भ्रांति नहीं। हम ही ने इस अव्यवस्था को उत्पन्न किया है, क्योंकि हमारा जीने का पूरा ढंग ही अव्यवस्थित है। और हम सामाजिक सुधारों इत्यादि के द्वारा व्यवस्था लाने की कोशिश कर रहे हैं। अव्यवस्था को बिना समझे तथा उसका अंत किये बिना ही हम व्यवस्था ढूँढने की कोशिश करते हैं। यह बात भ्रमित मन की स्पष्टता पाने की कोशिश जैसी ही है। भ्रमित मन भ्रमित है, वह स्पष्टता नहीं प्राप्त कर सकता। अतः क्या हमारे जीवन में, हमारे दैनिक जीवन में अव्यवस्था का अंत हो सकता है? परलोक में या किसी अन्य स्थान में नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन में क्या व्यवस्था आ सकती है? क्या अव्यवस्था का अंत हो सकता है? जब अव्यवस्था का अंत होता है तब व्यवस्था सहज रूप से आती है। ऐसी व्यवस्था जीवंत होती है, यह किसी ढाँचे या साँचे के अनुसार नहीं होती।</p>
<p>12 So we are investigating looking at ourselves and learning about ourselves. Learning is different from acquiring knowledge. Please this is rather - if you will kindly give your attention to this a little bit - that</p>	<p>हम यहाँ जाँच-पड़ताल कर रहे हैं; हम स्वयं को देख रहे हैं और स्वयं के बारे में सीख रहे हैं। सीखना वस्तुतः ज्ञान अर्जित करने से बिल्कुल भिन्न होता है।</p>

<p>learning is an infinite process, limitless process, whereas knowledge is always limited. And learning implies not only observing visually, optically, but also observing without any distortion, seeing things exactly as they are.</p>	<p>कृपया इस ओर थोड़ा ध्यान दें जिस सीखने की बात मैं कर रहा हूँ वह एक अनंत प्रक्रिया है, एक असीम प्रक्रिया है जबकि ज्ञान सदा सीमित है। और सीखने का अर्थ सिर्फ दृष्टिगत रूप से यानी आँखों से ही देखना नहीं है बल्कि बिना किसी विकृति के देखना भी है, वस्तुओं को जस का तस देखना है।</p>
<p>13 That requires that discipline - please, the word 'discipline,' as we said yesterday, means - the word comes from the word 'disciple.' 'Disciple' is one who is learning, not the terrible discipline of orthodoxy, tradition, or following certain rules, dictates, and so on, it's learning; learning through clear observation without distortion. Hearing things exactly what the other fellow is saying without any distortion. And learning is not accumulative because you're moving. You understand all this? So in learning what is disorder in ourselves, then order comes about very naturally, easily, unexpectedly. And when there is order, order is virtue. There is no other virtue except complete order, that is complete morality, not some imposed or dictated morality.</p>	<p>उसके लिए एक ऐसा अनुशासन चाहिए जो सिर्फ उस व्यक्ति के पास होता है जो सीख रहा है - रुढ़ि और परम्परा का कठिन अनुशासन नहीं, या नियमों और विधि-विधानों का अनुसरण करने का अनुशासन भी नहीं। यह है सीखना, स्पष्ट अवलोकन द्वारा सीखना तथा बिना किसी विकृति के सुनना कि दूसरा व्यक्ति क्या कह रहा है। और सीखने का अर्थ संग्रह करना नहीं होता क्योंकि सीखने की प्रक्रिया में आप सदा गतिशील रहते हैं। क्या आप यह सब समझ रहे हैं? तो यह सीखने में ही कि हमारे भीतर अव्यवस्था क्या है, व्यवस्था अत्यंत सहज, सरल और अप्रत्याशित रूप से आ जाती है। और जहाँ व्यवस्था है, व्यवस्था ही सदाचार है। पूर्ण व्यवस्था के अतिरिक्त कोई अन्य सदाचार नहीं होता - वहीं पूर्ण नैतिकता है, न कि आरोपित और थोपी हुई नैतिकता।</p>
<p>14 Then we ought also [to] talk over together this whole question of sorrow. You don't mind? Because man and woman, children throughout the world, whether they live behind the Iron Curtain (which is most unfortunate for them), whether they live in Asia or India or Europe or here, every human being, whether rich or poor, intellectual or just ordinary layman like us, we all go through every form of suffering. Have you ever looked at people that have cried through centuries? Through thousands of wars? The husband, the wife, the children. There is immense sorrow in the world. Not that there is not also pleasure, joy, and so on, but in understanding and perhaps ending sorrow we'll find something much greater.</p>	<p>अब हमें दुःख के प्रश्न पर भी चर्चा करनी चाहिए। आपको आपत्ति तो नहीं है? पुरुष, स्त्री और बच्चे, चाहे वे दुर्भाग्यवश लौह आवरण में रहते हों या एशिया यूरोप में या यहाँ - हर मानव, अमीर या गरीब, बुद्धिजीवी या हमारे जैसा सामान्य जन, सभी को नाना प्रकार के दुःखों से गुजरना पड़ता है। आपने उन लोगों के बारे में कभी सोचा है जो सदियों से हजारों युद्धों की पीड़ाएँ झेलते रहे हैं? संसार में असीम दुःख है। ऐसा नहीं है कि यहाँ सुख, उल्लास इत्यादि नहीं है, लेकिन यदि हम दुःख को समझ लें और इस प्रकार उसका अंत कर लें तो हमें इससे कहीं बड़ी चीज मिलेगी।</p>
<p>15 So we must go into this complex question of sorrow. And whether it can ever end or man is doomed forever to suffer; suffer not only physically, which depends how ordinary [a] life one leads, whether your body is drugged: alcohol, tobacco, nicotine, alcohol,</p>	<p>अतः हमें दुःख के इस जटिल प्रश्न की छानबीन करनी चाहिए कि क्या इसका कभी अंत हो सकता है या मनुष्य की यह नियति है कि वह सदा दुःख भोगता रहे - न केवल शारीरिक रूप से बल्कि</p>

<p>and all that, whether the body has been destroyed. Psychologically, inwardly we have suffered enormously without perhaps not saying a word about it. Or crying your heart out.</p>	<p>मनोवैज्ञानिक रूप से भी। आंतरिक रूप से हम लोग घोर दुःख भोग चुके हैं और संभव है कि हमने कभी एक शब्द भी इस विषय में कभी न बोला हो, या दिल खोलकर कभी रो भी न पाये हों।</p>
<p>And during all this long evolution, evolution of man from the beginning of time 'til now, every human being on this earth has suffered. Suffering is not merely the loss of someone you think you like or love, but also the suffering of the very poor, the illiterate. If you go to India or other parts of the world, you see people walking miles and miles to go to a school, little girls and little boys. They'll never be rich, they will never ride [in] a car, probably never have a hot bath. They have one sari or one dress, whatever they wear and that's all they have. And that is sorrow. Not for the man who goes by in a car, but the man in the car looks at this and he's in sorrow if he's at all sensitive, aware. And the sorrow of ignorance; not ignorance of writing, literature, and all the rest of it, but the sorrow of a man who doesn't know himself. There are multiple ways of sorrow.</p>	<p>काल के आरंभ से लेकर अब तक मनुष्य की इस लंबी विकास यात्रा के दौरान इस पृथ्वी पर हर मानव दुःख भोग चुका है। दुःख का अर्थ केवल किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसे आप पसंद करते हों या जो आपको प्रिय हो खो देना नहीं है बल्कि अत्यंत निर्धन, अशिक्षित का भी अपना दुःख है। यदि आप भारत या विश्व के किन्हीं अन्य भागों में जाएं तो आप देखेंगे कि छोटे लड़के-लड़कियों को स्कूल जाने के लिए मीलों तक चलना पड़ता है। वे कभी कार में नहीं बैठ पाएंगे, धनवान नहीं होंगे, शायद कभी गरम पानी से नहाना भी नहीं जानेंगे। उनके पास केवल एक साड़ी या पोशाक होगी। और यही दुःख है और यदि उनके निकट से कोई कार में बैठ कर जाए तो यह सब देखकर उसको भी दुःख होगा - यदि वह जरा भी संवेदनशील और जागरूक हैं। और फिर अज्ञान का भी दुःख है, लिखना-पढ़ना न जानने वाला अज्ञान नहीं बल्कि वह अज्ञान जो आत्मज्ञान का अभाव है। दुःख के बहुत से रूप हैं।</p>
<p>16 And we are asking, can this sorrow end with each one? There is the sorrow of oneself, in oneself, and the sorrow of the world. Thousands of wars, people maimed, hurt, appalling cruelty: not a particular form of cruelty of which you are talking a great deal, a particular form and you are rebelling against that particular form, but you never ask, is there an end to cruelty. Every nation on earth has (coveted? cultivated?) cruelties, appalling. And we're still perpetuating that cruelty. And cruelty brings enormous sorrow. Seeing all this - not from a book, not from a traveller, not from a tourist (tourists go abroad just to amuse themselves, see sights and having a good time, a holiday), but if you are travelling as a human being, just observe it, being aware sensitively to all this, sorrow is a terrible thing. And can that sorrow end?</p>	<p>हम पूछते हैं: क्या हर किसी के इस दुःख का अंत हो सकता है? एक दुःख स्वयं का है और दूसरा संसार का। सहस्रों युद्ध उनमें घायल और अपंग हो गये लोग, भीषण क्रूरता। पृथ्वी के हर राष्ट्र ने अत्याचार किये हैं। यह सब दिल दहलाने वाला है और फिर भी हम अभी तक अत्याचार और क्रूरता बनाये रखे हुए हैं। क्रूरता घोर दुःख को जन्म देती है। इस सबको देखते और समझते हुए किसी किताब द्वारा नहीं, और न ही उस यात्री से जो मजा करने के लिए विदेश यात्रा करता है बल्कि एक मानव के रूप में यात्रा करते हुए, बस देखते हुए, संवेदना के साथ सजग होते हुए हम देखते हैं कि दुःख एक भयंकर वस्तु है। और क्या इस दुःख का अंत हो सकता है?</p>
<p>17 Please, ask yourself that question. The speaker is not stimulating you to feel sorrow, the speaker is not telling you what sorrow is, it's right in front of us, right</p>	<p>कृपया स्वयं से यह प्रश्न कीजिए। दुःख का अनुभव करने के लिए वक्ता आपको उकसा नहीं रहा है और</p>

<p>inside you. Nobody needs to point it out, if you keep your eyes open, if you are sensitive, aware of what is happening in this monstrous world. So please ask yourself this question: whether sorrow can ever end. Because like hatred, when there is sorrow there is no love. When you are suffering, concerned with your own suffering, how can there be love? So one must ask this question, however difficult it is to find - not the answer, but the ending of sorrow.</p>	<p>न ही आपको बता रहा है कि दुःख क्या है। वह तो बिल्कुल आपके सामने है, आपके भीतर है। वह बताने के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है, यदि आपने अपनी आँखें खुली रखी हैं, यदि आप संवेदनशील हैं, इस बात के प्रति सजग हैं कि इस विकराल संसार में क्या हो रहा है? अतः आप स्वयं से ही यह प्रश्न कीजिए: क्या दुःख का कभी अंत हो सकता है? क्योंकि घृणा की तरह ही जहाँ दुःख है वहाँ प्रेम नहीं है। जब आप दुःखी हैं और उसी दुःख की चिंता में लीन हैं, तब आप में प्रेम हो सकता है? अतः हमें यह प्रश्न अवश्य करना चाहिए - चाहे इसे प्राप्त करना कितना ही कठिन हो - उत्तर नहीं बल्कि दुःख का अंत।</p>
<p>18 What is sorrow? Not only the physical pain and the enduring pain, a person who is paralysed or maimed or diseased, but also the sorrow of losing someone: death. We'll talk about death presently. Is sorrow self-pity? Please, investigate. We're not saying it is or it is not, we're asking, is sorrow brought about by self-pity, one of the factors? Sorrow brought about by loneliness? Feeling desperately alone, lonely; Not alone: the word 'alone' means 'all one.' But feeling isolated, having in that loneliness no relationship with anything.</p>	<p>दुःख क्या है? न केवल शारीरिक और स्थायी पीड़ा, किसी अपंग लाचार, रुग्ण अथवा लकवाग्रस्त व्यक्ति की पीड़ा बल्कि किसी व्यक्ति से बिछुड़ जाने का दुःख भी; मृत्यु। हम अभी मृत्यु पर चर्चा करेंगे। क्या दुःख आत्मदया है? कृपया इसकी छानबीन करें। हम यह नहीं कह रहे हैं कि ऐसा है या ऐसा नहीं है। हमारा प्रश्न है क्या दुःख आत्मदया से पैदा होता है अर्थात् क्या आत्मदया दुःख का एक कारक है? क्या दुःख का कारण अकेलापन है बिल्कुल एकाकी अनुभव करना? वह एकाकीपन नहीं जो ऐक्य की अवस्था है, जिसमें सब कुछ एक हो गया है। इसीलिए एकाकी अनुभव करना नहीं बल्कि विलगाव का अनुभव करना तथा विलगाव की उस स्थिति में किसी के साथ कोई संबंध नहीं रखना।</p>
<p>19 Is sorrow merely an intellectual affair? To be rationalized, explained away? Or to live with it without any desire for comfort. You understand? To live with sorrow, not escape from it, not rationalize it, not find some illusive or exclusive comfort: religious or some illusory romantic escapes, but to live with something that has tremendous significance. Sorrow is not only a physical shock, when one loses one's son or husband, wife or girl, whatever it is, it's a tremendous biological shock. One is almost paralysed with it. Don't you know all this?</p>	<p>क्या दुःख केवल एक ऐसा बौद्धिक मामला है जिसे तर्क का जामा पहना दिया जाए या जिसकी व्याख्या कर दी जाए? या क्या बिना किसी सुख-सुविधा की आकांक्षा के कोई व्यक्ति दुःख के साथ जी सकता है? क्या आप यह प्रश्न समझ रहे हैं? दुःख के साथ जीना, इससे पलायन करना नहीं, इसका औचित्य सिद्ध करना नहीं, कोई भ्रांतिजनम या विशिष्ट सांत्वना प्राप्त करना नहीं, धार्मिक या भ्रामक रूमानी पलायन नहीं बल्कि एक ऐसी वस्तु के साथ जीना जिसकी असाधारण सार्थकता है। दुःख केवल अपना पुत्र, पति, पत्नी या सहेली खो देने पर होनेवाला शारीरिक आघात नहीं है; वह एक प्रबल जैविक आघात है; इस आघात से व्यक्ति लगभग पंगु हो जाता है। क्या आपको यह सब नहीं मालूम है?</p>



<p>20 There is also the sense of desperate loneliness. Can one look at sorrow as it is actually in us, and remain with it, hold it, and not move away from it. Sorrow is not different from the one who suffers. The person who suffers wants to run away, escape, all kinds of things. But to look at it as you look at a child, a beautiful child, to hold it, never escape from it. Then you will see for yourself, if you really look deeply, that there is an end to sorrow. And when there is an end to sorrow there is passion; not lust, not sensory stimulation, but passion.</p>	<p>अगतिक अकेलेपन का भी एक अनुभव है। हमारे भीतर दुःख जिस रूप में भी मौजूद है क्या वस्तुतः उसी रूप में उसे देख सकते हैं और उसके साथ रह सकते हैं, उसे अपने साथ रख सकते हैं, बिना उससे दूर हटे हुए? दुःख वस्तुतः उस व्यक्ति से भिन्न नहीं है जो दुःख भोग रहा है। जो व्यक्ति दुःख भोग रहा है वह उससे दूर भागना चाहता है, पलायन करना चाहता है, वह नाना प्रकार के उपाय करना चाहता है। परंतु यदि आप दुःख को उसी तरह देखें जैसे आप एक बच्चे को, एक सुन्दर बच्चे को देखते हैं, उसे अपने पास बैठाते हैं अर्थात् यदि आप दुःख से कभी पलायन न करें, तो आप सचमुच गहराई से दुःख को देखते हुए स्वयं पाएंगे कि दुःख का अंत हो जाता है। और जब दुःख का अंत होता है तो राग ('पैशन') पैदा होता है; कामुकता नहीं, संवेदनात्मक उत्तेजना नहीं बल्कि राग।</p>
<p>21 Very few have this passion, because we are so consumed with our own griefs, with our own pains, with our own pity and vanity and all the rest of it. We have a great deal of energy - look what is happening in the world - tremendous energy to invent new things, new gadgets, new ways of killing others. To go to the moon needs tremendous energy and concentration, both intellectual and actual. We've got tremendous energy, but we dissipate it by conflict, through fear, through endless chattering about nothing. And passion has tremendous energy. That passion is not stimulated, it doesn't seek stimulation, it's there, like a burning fire. It only comes when there is the end of sorrow.</p>	<p>बहुत कम ही लोगों में यह राग है, क्योंकि हम अपने दुःख-दर्द में, अपने शोक-संताप में तथा अपने मिथ्याभिमान में ही जलते रहते हैं। हमारे पास ऊर्जा तो बहुत है, जरा देखिए संसार में क्या हो रहा है। नयी वस्तुओं, नये यंत्रों तथा विनाश के नये साधनों का आविष्कार करने में कितनी अधिक ऊर्जा लगायी जा रही है। चन्द्रमा तक उड़ान करने में अत्यधिक ऊर्जा और एकाग्रता बौद्धिक और वास्तविक दोनों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे पास असाधारण ऊर्जा है परंतु हम इसका अपव्यय द्वंद्व, भय और निरर्थक अनन्त प्रलाप के द्वारा कर देते हैं। राग में असाधारण ऊर्जा निहित है उत्तेजित होकर यह राग उत्पन्न नहीं किया जा सकता। इस राग को उत्तेजना की आवश्यकता नहीं है। यह तो एक प्रज्वलित अग्नि की तरह विद्यमान है। यह तभी आता है जब दुःख का अंत हो जाता है।</p>
<p>22 And when you have this sorrow, the ending of it, it's not personal, because you are the rest of humanity, as we said yesterday afternoon. We all suffer. We all go through loneliness, every human being on this earth, rich or poor, learned or ignorant, everybody goes through tremendous anxieties, conscious or unconscious. Our consciousness is not shared, it's not yours, it's human consciousness. In the content of that</p>	<p>जब आप दुःख का अंत कर लेते हैं तो यह व्यक्तिगत नहीं रह जाता, क्योंकि जैसा कि मैंने कल कहा, आप ही शेष मानव जाति है। तुम सभी दुःख भोगते हैं, हम सभी अकेलेपन से गुजरते हैं, इस पृथ्वी पर हर मानव, चाहे वह अमीर हो या गरीब, विद्वान हो या अनपढ़, चेतन या अचेतन रूप से गहन चिंताओं से गुजरता है। आपकी चेतना आपकी</p>

<p>consciousness is all your beliefs, your sorrows, your pities, your vanities, your arrogance, your search for power, position, and all that. All that is your consciousness, which is shared by all human beings. Therefore it's not your particular consciousness. And when one really realizes that, not verbally or intellectually or theoretically or as a concept, but as an actuality, then you'll not only [not] kill another, hurt another, but you'll have some other thing which is totally different, of a different dimension altogether.</p>	<p>निजी नहीं है, यह मानव चेतना है। इस चेतना की अंतर्वस्तु में ही समाहित हैं आपके सारे विश्वास, दुःख, कष्ट, मिथ्याभिमान, घमंड तथा शक्ति और पद-प्रतिष्ठा की चाह एवं खोज। यही सब आपकी चेतना है और इसमें सहभागी हैं सभी मानव। अतः यह कोई आपकी विशिष्ट चेतना नहीं है। जब आपको वस्तुतः इस बात की स्पष्ट प्रतीति हो जाएगी अर्थात् शाब्दिक, बौद्धिक या सैद्धांतिक रूप से नहीं, किसी अवधारणा की तरह नहीं, बल्कि एक वास्तविकता की तरह तो आप दूसरे की हत्या नहीं करेंगे, दूसरे को चोट नहीं पहुंचाएंगे, बल्कि तब आपके पास एक ऐसी चीज होगी जो बिल्कुल ही भिन्न है, जो एक बिल्कुल ही भिन्न आयाम की है।</p>
<p>23 We ought to talk over together too what is love. I hope all this is not boring you. (Laughter) If you want to take a breather, it's all right. As the speaker said, we ought to go into this great question of what is love. We use the word 'love' so loosely, it has become merely sensuous, sexual; love is identified with pleasure. And to find that perfume one must go into the question what is not love. Through negation you come to the positive, not the other way around. Am I making myself clear? Through negation of what is not love, then you come to that which is immensely true, which is love.</p>	<p>प्रेम क्या है, इस महान् प्रश्न पर भी हमें मिल जुल कर चर्चा कर लेनी चाहिए। 'प्रेम' शब्द का प्रयोग हम अत्यंत लापरवाही से करते हैं। यह मात्र ऐन्द्रिय और कामुक हो गया है; प्रेम का संबंध सुख से जोड़ा जाता है। प्रेम की सुगंध को प्राप्त करने के लिए हमें इस प्रश्न की छानबीन करनी होगी कि प्रेम क्या नहीं है। नकारात्मक मार्ग से ही हम सकारात्मक तक पहुँचते हैं न कि सकारात्मक से नकारात्मक की ओर। क्या मैं अपनी बात-साफ रख पा रहा हूँ? जो प्रेम नहीं है उसको नकार कर ही हम उस तक पहुँचते हैं जो असीम रूप से सत्य है, जो प्रेम है।</p>
<p>24 So love is not hate: that's obvious. Love is not vanity, arrogance. Love is not in the hand of power. The people who are in power, wanting power, it doesn't matter [if it's] over a small child or wanting power over a whole group of people or a nation, that surely is not love. Love is not pleasure, love is not desire. I don't know if you have time to go into the question of desire. Perhaps we may. Love is certainly not thought. So can you put aside all that: your vanity, the sense of power - however small, however little it is, it's like a worm. And the more power you have, the more ugly - and therefore in that there is no love. When one is ambitious, aggressive, on which you are all brought up: to be aggressive, to be successful, to be famous, to be known, which is all so utterly childish - from the speaker's point of view. (Laughter) How can there be love?</p>	<p>प्रेम घृणा नहीं है, यह तो स्पष्ट ही है। प्रेम अभिमान और अहंकार भी नहीं है। जहां प्रभुत्व है वहां प्रेम नहीं है। जब किसी व्यक्ति के पास प्रभुत्व होता है या वह इसकी आकांक्षा करता है चाहे यह प्रभुत्व एक छोटे से बच्चे पर हो या एक बड़े जन समूह पर या एक राष्ट्र पर तो वहां प्रेम नहीं होता। प्रेम का संबंध सुख से नहीं है और न वासना से। निश्चय ही प्रेम विचार भी नहीं है। तो क्या आप इस सबको परे रख सकते हैं यानी अपने मिथ्याभिमान को, अपने प्रभुत्व को भले ही वह कितना ही छोटा हो, क्योंकि वह एक कीड़े के समान है? आपके पास जितना ही अधिक प्रभुत्व होगा उतना ही अधिक वह कुरूप होगा और इसलिए उसमें प्रेम नहीं होगा। जब आप महत्वाकांक्षी और आक्रामक हैं - जैसा कि आपका पालन-पोषण ही किया जाता है ताकि आप संसार में सफल और प्रसिद्ध हो जोकि वक्ता की दृष्टि से एक बिल्कुल ही</p>

	बचकाना बात है - तो वहां प्रेम कैसे हो सकता है?
25 So love is something that cannot be invited or cultivated. It comes about naturally, easily, when the other things are not. And in learning about oneself one comes upon this: where there is love, there is compassion; and compassion has its own intelligence. That is the supreme form of intelligence, not the intelligence of thought, intelligence of cunning, deceptions and all the rest of it. It's only when there is complete love and compassion there is that excellence of intelligence which is not mechanical.	अतः प्रेम ऐसी वस्तु है जिसे न्योता या संजोया नहीं जा सकता। इसका आगमन सहज और अनायास होता है जब वहां अन्य विषय नहीं होते। स्वयं के बारे में जानते हुए अकस्मात् हमारा सामना इससे हो जाता है; और जहां प्रेम है वहां करुणा भी है तथा करुणा की एक अपनी प्रज्ञा है। करुणा की प्रज्ञा का सर्वोच्च रूप है न कि विचार, धूर्तता और छल-कपट की बुद्धिमत्ता। जब पूर्ण प्रेम और करुणा का आविर्भाव होता है तभी प्रज्ञा का वह श्रेष्ठतम रूप प्रकट होता है जो यांत्रिक नहीं है।
26 Then we ought to talk about death. Shall we? Are you interested in finding out - (Laughter) - what death is? What's the meaning of that word; the dying; death; the ending. Not only the ending, what happens after death? Does one carry the memories of one's own life? The whole Asiatic world believes in reincarnation. That is, I die, I have led a miserable life, perhaps done a little good here and there, and next life I'll be better, I'll do more good. It's based on reward and punishment, like everything else in life. I will do good this life, and I will be better next life. It's based on the word 'karma,' probably you have heard of it. The word 'karma' means in Sanskrit 'action' - I won't go into it. So there is this whole belief that when one has lived this life, next life you have a better chance, depending what kind of life you have led now: the reward and punishment. And in Christianity there is this whole sense (?) of resurrection and so on.	अब हमें मृत्यु पर चर्चा करनी चाहिए। क्या हम यह चर्चा करें? क्या आप यह पता लगाने में दिलचस्पी रखते हैं कि मृत्यु क्या है? मृत्यु शब्द का अर्थ है मर जाना, समाप्त हो जाना? सिर्फ समाप्त हो जाना नहीं, बल्कि मृत्यु के बाद क्या होता है? क्या मृत्यु के बाद भी कोई व्यक्ति अपने जीवन की स्मृतियों को ढोता रहता है? एशिया का अधिकांश भाग पुनर्जन्म में विश्वास करता है। अर्थात् एक दुःखमय जीवन बिताने के बाद मेरा शरीर मर जाता है परंतु चूंकि इस जीवन में यदा-कदा मैंने कुछ कर्म किये हैं अतः अगले जन्म में मेरा स्थिति बेहतर होगी। मैं और भी अच्छा काम करूंगा। जीवन में अन्य चीजों की तरह यह भी पुरस्कार के लोभ और दंड के भय पर आधारित है। ईसाई धर्म में भी पुनरुत्थान ('रेसरेक्शन') का सिद्धांत है, इत्यादि।
27 So if we can put aside for the moment all that, really put aside, not cling to one thing or the other, then what is death? What does it mean to die? Not only biologically, physically, but also psychologically: all the accumulation of memories, one's tendencies, the skills, the idiosyncrasies, the things that one has gathered, whether it be money, knowledge, friendship, whatever you will; all that you have acquired. And death comes and says, "Sorry, you can't take anything with you."	परंतु यदि हम एक क्षण के लिए इस सबको अलग हटा दें, सबकुछ अलग हटा दें, किसी को पकड़े न रहें, तो मृत्यु क्या है? मर जाने का क्या अर्थ है? केवल जैविक और शारीरिक रूप से मर जाना नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी अर्थात् आपकी सारी संचित स्मृतियाँ, प्रवृत्तियाँ, दक्षताएं, विचित्रताएं तथा आप द्वारा संग्रह की हुई सारी वस्तुएँ, चाहे वह धन-दौलत हो, विद्वत्ता हो, मित्रता हो या अन्य कुछ, और एक दिन मृत्यु आती है और कहती है, 'माफ कीजिए, आप अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकते।'

<p>28 So what does it mean to die? Can we go into this question? Or are you frightened? So what is death? How do we inquire into it? You understand my question? I am living - I'm taking my[self] as an example - I'm living, I go along every day, routine, mechanical, miserable, happy, unhappy, you know the whole business. And death comes, through accident, through disease, through old age, senile - what is senility? Is it only for the old? Is it not senility when we're just repeating, repeating, repeating? When we act mechanically, thoughtlessly? Isn't that also a form of senility?</p>	<p>अतः मर जाने का क्या अर्थ है? क्या हम इस प्रश्न की छानबीन कर सकते हैं? या आप भयभीत है? मृत्यु क्या है? इसकी जाँच पड़ताल कैसे करेंगे? क्या आप मेरा प्रश्न समझ रहे हैं? मैं अभी जी रहा हूँ, मैं अपने जीवन का एक-एक दिन किसी तरह व्यतीत करता हूँ, यह बँधी-बँधायी दिनचर्या है यानी यह एक यांत्रिक मामला है, और इसमें सुख-दुःख दोनों हैं। फिर मृत्यु आ जाती है दुर्घटना, बीमारी, बुढ़ापा यानी वृद्धावस्थाजनित दुर्बलता के रूप में। यह वृद्धावस्था जनित दुर्बलता क्या है? क्या यह केवल वृद्ध लोगों के लिए है? क्या यह वृद्धावस्था वाली दुर्बलता नहीं है कि हम दूसरों की बातों को ही दोहराते चले जाते हैं या बिना विचारपूर्वक कोई कार्य यंत्रवत करते चले जाते है? क्या यह वृद्धावस्था वाली दुर्बलता का ही एक रूप नहीं है?</p>
<p>29 So death - because we are frightened of it, we never see the greatness of it, the extraordinary thing, like a child, baby being born: a new human being has come into being. That's an extraordinary event. And that child grows and becomes whatever you have all become. And then dies. Death is also something, most extraordinary it must be. And you won't see the depth and the greatness of it if one is frightened.</p>	<p>चूँकि हम मृत्यु से भयभीत हैं अतः हम इस असाधारण घटना की महत्ता को कभी नहीं देख पाते हैं। एक बच्चा जन्म लेता है एक नया मानव पैदा होता है। वह एक असाधारण घटना है, और वह बच्चा बड़ा होता है और बड़ा होकर वही हो जाता है जो आप लोग हो गये हैं, और फिर मर जाता है। मृत्यु भी एक अत्यंत असाधारण चीज है, ऐसी है ही। और यदि आप भयभीत हैं तो आप इसकी गहराई और इसकी महानता को नहीं देख पाएंगे।</p>
<p>30 So what is death? I want to find out what it means to die while I am living. I'm not senile, I've all my wits about me, I'm capable of thinking very clearly, perhaps occasionally go off the beam - (Laughter) - but I'm active, clear, all the rest of it. So I'm asking myself - I'm not asking you - I'm only observing; if you will observe also what is death. Death means surely the ending of everything: the ending of my relationship, [the] ending of all the things I've put together in my life; all the knowledge, all the experience, idiotic life I've led, a meaningless life, or trying intellectually to life; I've lived that way (not personally, but I'm taking that example). And death comes and says, "That's(?) the end." But I am frightened. It can't be the end. I've got so much, I've collected so much, not only furniture - (Laughter) - or pictures - when I identify myself with the furniture or the pictures or the bank account, I am the bank account, I am the picture, I am the furniture.</p>	<p>अतः मृत्यु क्या है? मैं पता लगाना चाहता हूँ कि जीते हुए ही मर जाने का क्या अर्थ है। मैं सटिया नहीं गया हूँ, मैं सतर्क और सक्रिय हूँ, मेरी विचार शक्ति अत्यंत तीक्ष्ण और स्पष्ट है, शायद मुझसे यदा-कदा भूल हो जाती हो, परन्तु मैं सक्रिय और स्पष्ट हूँ। अतः मैं स्वयं से ही प्रश्न कर रहा हूँ आपसे नहीं, मैं केवल देख रहा हूँ; और क्या आप भी देखेंगे कि मृत्यु क्या है? निश्चय रूप से मृत्यु का अर्थ है हर चीज का अंत हो जाना, मेरे संबंधों का अंत हो जाना, अपने जीवन में मैंने जो भी अर्जित किया है इस सभी का मेरा ज्ञान, मेरा अनुभव, मेरा जिया हुआ एक मूर्खतापूर्ण निरर्थक जीवन या बौद्धिक रूप से जीवन में अर्थ खोजने का मेरा प्रयास सब का अंत हो जाना। तब एक दिन मृत्यु आती है और कहती है “यह अंत है।” लेकिन मैं भयभीत हूँ कि सब कुछ समाप्त कैसे हो सकता है? मेरे पास इतना कुछ है। मैंने केवल फर्नीचर और चित्रों का ही नहीं</p>

<p>Right? When you identify with something so completely, you are that. Perhaps you don't like all this, but please, kindly listen. So I've established roots, I've established [a] great many things round me, so death comes and makes a clean sweep of all that. So I ask myself, is it possible to live with death all the time, not at the end of 90 years or 100 years - the speaker is 90 - sorry. (Laughter) Not at the end of one's life but can I, with all my energy, vitality, and all the things that go on, can I live with death all the time? Not commit suicide, don't mean - that's too silly. But live with death, which means ending every day of every thing I've collected; the ending.</p>	<p>बल्कि ढेर सारी वस्तुओं का संग्रह कर रखा है। जब मैं अपना तादात्म्य फर्नीचर, चित्र या अपने बैंक-खाते के साथ कर लेता हूँ तो मैं स्वयं फर्नीचर, चित्र और बैंक-खाते हो जाता हूँ। आप समझे? जब आप अपना तादात्म्य किसी के भी साथ पूर्ण रूप से कर लेते हैं तो आप वहीं हो जाते हैं। शायद आपको यह सब चर्चा अच्छी नहीं लगती लेकिन कृपया आप सुनते रहें। इस प्रकार मैं देखता हूँ कि मैंने जड़े स्थापित कर ली हैं, अपने आस-पास ढेरसारी चीजें इकट्ठी कर ली है और मृत्यु आती है तथा इन सबका अंत कर देती है। इसलिए मैं स्वयं से पूछता हूँ क्या यह संभव है कि मैं हर समय मृत्यु के साथ जी सकता हूँ? सौ वर्ष या नब्बे वर्ष की उम्र हो जाने पर नहीं वक्ता नब्बे वर्ष का है, क्षमा करें अपने जीवनकाल के अंत में नहीं बल्कि अपनी सारी ऊर्जा और शक्ति के साथ क्या मैं हर क्षण मृत्यु के साथ जी सकता हूँ? मेरा तात्पर्य आत्महत्या कर लेना नहीं है, वह तो मूर्खतापूर्ण बात हुई बल्कि मृत्यु के साथ जीना, जिसका अर्थ है प्रत्येक दिन उन सारी चीजों का अंत कर लेना जिन्हें मैंने संग्रह कर रखा है; अंत।</p>
<p>31 I do not know if you have gone into the question of what is continuity and what is ending. That which continues can never renew itself, reborn, clear. It can divide itself, that which is continuous - like you are doing in this country (inaudible) of religion. As we said, the word 'revive' means something that has withered, dying and you revive it. 32 Which is happening in this country, religious revival, they are shouting about it. And, I don't know if you have noticed, organized religions and the gurus and all the rest of them are tremendously rich people. (Laughter) Great property. You can do - religious. There is a temple in the south of India: every third day they have one million dollars. You understand? God is very profitable. (Laughter) This is not cynicism, this is actuality. We are facing actuality, and you can't be cynical or despairing, it is so; neither be optimistic or pessimistic. You have to look at these things.</p>	<p>मुझे मालूम नहीं है कि आपने कभी इस प्रश्न की छानबीन की है या नहीं कि सातत्य क्या है तथा अंत क्या है। यदि कोई वस्तु सतत बनी रहे तो वह स्वयं को पुनः नया नहीं कर सकती यानी उसका पुनर्जन्म नहीं हो सकता। वह अपना पुनरुद्धार कर सकती है। पुनरुद्धार का अर्थ है कोई ऐसी वस्तु जो निस्तेज हो गई है, जो मर रही है उसका आप पुनरुद्धार करते हैं। यही वो धार्मिक पुनरुद्धार है जिसका लोग बहुत शोर मचा रहे हैं। मुझे मालूम नहीं कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं कि संगठित धर्म और गुरु लोग अत्यंत धनी हैं और उनके पास ढेर सारी संपत्ति हैं। दक्षिण भारत में एक मंदिर है, वहाँ हर तीसरे दिन वे लोग दस लाख डालर इकट्ठा कर लेते हैं। क्या आप समझ रहे हैं? ईश्वर बहुत लाभदायक है। यह व्यंग्य नहीं है, वास्तविकता है। हम वास्तविकता का सामना कर रहे हैं, और आप सनकी या हताश नहीं हो सकते। यह ऐसा ही है आप न आशावादी हो सकते हैं न निराशावादी। आपको इन सब को देखना है।</p>
<p>33 So can I live with death, which means every thing that I have done, collected - pain, sorrow - end[s].</p>	<p>अतः क्या मैं मृत्यु के साथ जी सकता हूँ, जिसका अर्थ है जो कुछ भी मैंने किया है, जो कुछ भी मैंने</p>

<p>Ending is more important than continuity. The ending means the beginning of something new. If you merely continue, it is the same pattern being repeated in a different mould. Have you noticed another strange thing? We have made a great deal of mess in the world - tremendous mess, and we organize to clear up that mess, politically, religiously, socially and economically. And when that organization or institution doesn't work, we invent another organization. And never clearing up the mess but bringing about new organizations, new institutions - and this is called progress. (Laughter) I don't know if you have not noticed all this. This is what we are doing - thousands of institutions.</p>	<p>इकट्ठा किया है उन सब का अंत हो जाना? सातत्य से अधिक महत्वपूर्ण है अंत। अंत हो जाने का अर्थ है एक नवीनता का आरंभ। यदि आप ज्यों के त्यों बने रहें तो एक ही ढाँचे की पुनरावृत्ति विभिन्न रूपों में होती रहेगी। क्या आपने एक अन्य अद्भुत बात की ओर ध्यान दिया है? हमने संसार में भारी अव्यवस्था फैला रखी है, और इस अव्यवस्था को दूर करने के लिए हम राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक संगठन खड़ा करते हैं। और जब वह संगठन या संस्था कार्य नहीं करती तब हम दूसरी संस्था बना लेते हैं परंतु अव्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहती है। इस प्रकार हम अव्यवस्था तो दूर नहीं कर पाते लेकिन नये संगठन और संस्था बनाते चले जाते हैं और इसी को प्रगति कहा जाता है। मालूम नहीं, आपने इन सब बातों पर ध्यान दिया है या नहीं। हम सभी लोग यही कर रहे हैं हजारों संस्थाएं बनाते चले जा रहे हैं।</p>
<p>34 The other day we talked at the United Nations. War is going on, they've never stopped it, but they are reorganizing it. (Laughter) You are also doing exactly the same thing in this country. We never clear up the mess. And we depend on organizations to clear that up; or new leaders, new gurus, new priests, new faiths, and all that rubbish that's going on. So can I live with death - that means freedom, complete, total, holistic freedom. And therefore in that freedom there is great love and compassion, and that intelligence which has not an end, which has immense -</p>	<p>हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संध में हमारी एक वार्ता हुई। युद्ध जारी है, वे इसे कभी नहीं रोक पाये, परंतु वे इसी का पुनर्गठन कर रहे हैं। इस देश में भी आप लोग बिल्कुल यही कर रहे हैं। हम अव्यवस्था और गड़बड़ी को दूर नहीं करते। हम यह कार्य करने के लिए संगठन या संस्था, नये नेता, नये गुरु, नये धर्माचार्य या नयी विचारधारा पर निर्भर रहते हैं। तो क्या मैं मृत्यु के साथ जी सकता हूँ? इसका अर्थ है स्वतंत्रता पूर्ण, समग्र और अखंड स्वतंत्रता। और इस स्वतंत्रता में परम प्रेम और करुणा है, तथा वह प्रज्ञा है जिसका कोई अंत नहीं है, जो असीम है।</p>
<p>And also we ought to talk over together what is religion. May we go on? You are not too tired? The speaker is not trying to convince you of anything, please believe me: nothing! He's not trying to force you through stimulation, through some other means. We are both looking at the world, your personal world and the world about you. You are the world, the world is not different from you. You have created this world and you are responsible for it, completely, totally, whether you are a politician or an ordinary man in the street like us.</p>	<p>और अब हमें इसपर भी साथ-साथ चर्चा करनी चाहिए कि धर्म क्या है। क्या चर्चा को आगे बढ़ाया जाय? आप अधिक थक तो नहीं गये हैं? कृपया विश्वास रखें कि वक्ता आपसे कोई बात मनवाने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह उत्तेजना या अन्य साधनों के द्वारा आपको बाध्य करने की कोशिश नहीं कर रहा है। हमलोग साथ-साथ संसार को देख रहे हैं। आपके व्यक्तिगत संसार को तथा आपके आस-पास के संसार को भी। आप ही संसार हैं, संसार आपसे भिन्न नहीं है। आपने इस संसार को बनाया है और आप इसके लिए उत्तरदायी हैं पूर्णत, समग्रतः चाहे आप कोई बड़े राजनेता हों या कोई मामूली आदमी हों।</p>

<p>35 We also [ought to] talk over together what is religion. Man has always sought something beyond all this pain and anxiety, sorrow. Is there something that is sacred, eternal, that's beyond all the reaches of thought. This has been one of the questions from ancient of times. What is sacred? What is that which has no time, that which is incorruptible, that which nameless; that which has no quality, no limitation, the timeless, the eternal? Is there such a thing? Man has asked this thousands and thousands of years ago. So he has worshipped the sun, the earth, nature, the trees, the birds; everything that's living on this earth man has worshipped [since] ancient times. If you have heard of the Vedas and the Upanishads and so on, they never mention god. That which is supreme, they said, is not manifested, and so on, I won't go into all that.</p>	<p>अतः हम मिलजुल कर चर्चा कर रहे हैं कि धर्म क्या है। मनुष्य ने सदा किसी ऐसी वस्तु की खोज की है जो उसके समस्त दुःख, चिंता और कष्ट के परे हो। क्या कोई कुछ ऐसा है जो पवित्र और शाश्वत हो तथा जो विचार की पहुँच के परे हो? अत्यंत प्राचीन काल से ही यह प्रश्न रहा है। पवित्र क्या है? वह क्या है जिसमें काल नहीं है, जो अदृश्य है, जिसका कोई नाम नहीं है, जिसकी कोई गुणवत्ता नहीं है तथा कोई सीमा नहीं है - कालातीत और शाश्वत? क्या कुछ ऐसा है? सहस्रों वर्षों से मनुष्य यह पूछता आया है। अतः उसने सूर्य, पृथ्वी, प्रकृति, पेड़ और पक्षी की पूजा की है। इस पृथ्वी पर हर जीवित वस्तु की पूजा मनुष्य प्राचीन काल से ही करता चला आया है। वेद और उपनिषद ईश्वर की बात नहीं करते। वे कहते हैं कि वह जो सर्वोच्च है प्रकट नहीं होता।</p>
<p>36 So are you asking that question too. Are you asking the question, is there something sacred? Is there something that is not put together by thought, as all religions are, organized [religion], whether it's Christianity, Hinduism, Buddhism, and so on. In Buddhism there is no god. Among the Hindus, as I said, there are about 300,000 gods. It's great fun to have so many. (Laughter) You can play with them all. And there are the gods of books, the god according to the Bible, the gods according to the Koran, the Islamic world. I don't know if you have noticed when religions are based on books, like the Bible or the Koran, then you have Fundamentalists, then you have people who are bigoted, narrow, intolerant, because the book says so. Haven't you noticed all this? This country is having the Fundamentalists, go back to the book. Don't get angry please, just look at it.</p>	<p>अतः क्या आप भी वह प्रश्न कर रहे हैं? क्या आप भी पूछ रहे हैं कि क्या कुछ ऐसा है जो पवित्र है? क्या कोई ऐसी वस्तु है जो विचार द्वारा निर्मित नहीं है; सभी संगठित धर्म तो विचार द्वारा ही निर्मित हैं, चाहे वह ईसाई धर्म हो या हिन्दू अथवा बौद्ध धर्म या कोई और। बौद्ध धर्म में कोई ईश्वर नहीं है। हिन्दू धर्म में लाखों देवता हैं, जो कि आमोद-प्रमोद के लिए बहुत अच्छा है। आप उन सबसे खेल सकते हैं। और फिर धर्मग्रंथों के ईश्वर हैं - बाइबिल के अनुसार ईश्वर, कुरान के अनुसार ईश्वर। मुझे मालूम नहीं कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं कि जब धर्म पुस्तकों पर आधारित होते हैं, जैसे बाइबिल या कुरान, तो लोगों में कट्टरता, संकीर्णता और असहिष्णुता पायी जाती है क्योंकि पुस्तकें जो यही सब कहती हैं। क्या आपने इन सब पर ध्यान नहीं दिया है? इस देश में ऐसे रुढ़िवादियों की कमी नहीं है जो हर समस्या का समाधान अपने धर्म की पुस्तक में ही ढूँढते हैं। कृपया नाराज न हों केवल देखें।</p>
<p>37 So we are asking, what is religion? Not only what is religion, but the religious brain, religious mind. To inquire into that deeply, not superficially, there must be total freedom, complete freedom. Not freedom from one thing or the other, but freedom as a whole, per se. Then we have to ask also - sorry - the world 'religion' etymologically has no, they can't explain that word. It</p>	<p>तो हमलोग पूछ रहे हैं: धर्म क्या है? न केवल धर्म क्या है बल्कि धार्मिक मस्तिष्क और धार्मिक मन क्या है? सतही रूप से नहीं बल्कि गहरे रूप से इस प्रकार की छानबीन करने के लिए समग्र मुक्ति की आवश्यकता है। किसी एक या दूसरे विषय से मुक्ति नहीं बल्कि अपने आप में एक अखंड मुक्ति। अतः</p>

<p>had different meanings at different times and different ages. So we are asking, when there is that freedom, is it possible, living in this ugly world, is it possible to be so free from pain, sorrow, anxiety, loneliness and all the rest of it.</p>	<p>हमारा प्रश्न है जब ऐसा मुक्ति मिल जाए तो इस कुरूप संसार में जीते हुए, क्या यह संभव है कि हम दुःख, पीड़ा चिंता और अकेलेपन से भी मुक्त हो जाएं।</p>
<p>38 Then you have to find out also what is meditation: contemplation in the Christian world, sense, and meditation in the Asiatic sense. Probably meditation has been brought to this country by the yogis, gurus and all those superstitious people, traditional people; and therefore they're mechanical. So we'll have to find out what is meditation. Do you want to go into it? Does it amuse you, or do you want to do it really? Is it a form of entertainment, meditation? First let me learn meditation, find out, and then I'll act properly. You understand the game one plays? Or, if there is order in one's life, real order, as we explained, then what is meditation? Is it following certain systems, methods: the Zen method, the Buddhist meditation, the Hindu meditation, and the latest guru with his meditation? They are always bearded, full of money, you don't know all the rest of that business.</p>	<p>तब आपको यह भी पता लगाना होगा कि ध्यान क्या है। ईसाई धर्म के अर्थ में चिंतन-मनन तथा एशिया में प्रचलित अर्थ में ध्यान। संभवतः इस देश में ध्यान की नींव रखी गयी है योगियों, गुरुओं द्वारा तथा अंधविश्वासी एवं परंपरावादी लोगों द्वारा, और इसीलिए ध्यान यांत्रिक हो गया है। अतः हमें यह पता लगाना होगा कि ध्यान क्या है? क्या आप इसकी छानबीन करना चाहते हैं? क्या आप इससे केवल मनोरंजन कर लेना चाहते हैं या आप वस्तुतः इसकी गहराई में उतरना चाहते हैं? क्या ध्यान मनोरंजन का ही एक रूप है? पहले में ध्यान करना सीख लूं फिर मैं ठीक से कार्य करूंगा। क्या आप इस तरह के खेल को समझते हैं जो लोग प्रायः आजकल खेल रहे हैं? परंतु यदि आपके जीवन में व्यवस्था आ जाए, वह वास्तविक व्यवस्था जिसकी हमने पहले चर्चा की, तो ध्यान क्या है? क्या ध्यान का अर्थ किसी विधि या पद्धति का अनुसरण करना है - जैन पद्धति, हिन्दू पद्धति या अन्य नये गुरुओं की नवीनतम पद्धति? ऐसे गुरुओं की हमेशा लंबी दाढी होती है और उनके पास बहुत रुपया-पैसा भी होता है। आपको तो यह सब मालूम ही है।</p>
<p>39 So what is meditation? If it is determined, if it following a system, a method, practising day after day, day after day, what happens to the human brain? It becomes more and more dull. Haven't you noticed this? When you repeat, repeat, repeat - it may be [the] wrong note, but you'll repeat it. Like a pianist, if he repeats by himself and he plays the wrong note, he'll keep on playing the wrong note all the time. So is meditation something entirely different? It's nothing whatever to do with method, system, practices; therefore it can never be mechanical. It can never be conscious meditation. You understand what I am saying? Do please understand this. It's like a man consciously wanting money and pursuing money; what's the difference between the two? Consciously you meditate, wanting to achieve peace, silence, and</p>	<p>अतः ध्यान क्या है? यदि यह नियत हो यानी यदि किसी विधि या पद्धति का दिन-प्रति-दिन अनुसरण या अभ्यास किया जाए तो मानव मस्तिष्क के साथ क्या घटित होगा? वह अधिक से अधिक मंद हो जाएगा। क्या आपने इस पर ध्यान दिया है? आप निरंतर दोहराते चले जाते हैं। हो सकता है कि वह अशुद्ध राग या स्वर हो लेकिन आप दोहराते रहते हैं। क्या ध्यान इन सबसे बिल्कुल ही भिन्न है? इसका कोई भी संबंध विधि, पद्धति या अभ्यास से नहीं है। अतः यह कभी यांत्रिक नहीं हो सकता। ध्यान कभी सचेतन नहीं हो सकता। कृपया इसको समझने की कोशिश कीजिए। सचेतन ध्यान तो वैसा ही है जैसे कि कोई आदमी चेतन रूप से रुपये-पैसे की आकांक्षा करता है और इसके लिए प्रयास करता है। उसी तरह सचेतन रूप से आप ध्यान करते हैं, शांत, मौन</p>



<p>all that. Therefore they are both the same, the man who pursues money, success, power, and the man who pursues so-called spiritually -</p>	<p>इत्यादि को उपलब्ध करने की आकांक्षा करते हुए। अतः ये दोनों एक ही तरह हैं एक आदमी जो रुपये-पैसे, सफलता, प्रभुत्व आदि की खोज करता है और दूसरा तथा कथित आध्यात्मिकता की।</p>
<p>So is there a meditation which is not determined, practised? There is, but that requires enormous attention. That attention is a flame and that attention is not something that you come [to] much later, but attention now to everything, every word, every gesture, every thought: to pay complete attention, not partial. If you are listening partially now, you are not giving complete attention. When you are so completely attentive there is no self, there is not limitation.</p>	<p>अतः क्या कोई ऐसा ध्यान है जो नियत नहीं है, जिसका अभ्यास नहीं किया जाता? ऐसा ध्यान है, परंतु उसके लिए विपुल अवधान चाहिए। वह अवधान एक अग्निशिखा की तरह है, वह अवधान ऐसा कुछ नहीं है जो बाद में आये। यह अवधान हर वस्तु, हर शब्द हर भंगिमा तथा हर विचार के प्रति हैं यानी इन सबके प्रति आंशिक नहीं बल्कि समग्र ध्यान देना। यदि आप आंशिक रूप से ही अभी सुन रहे हैं तो यह समग्र नहीं है। जब आप समग्र रूप से सावधान होते हैं तो वहाँ कोई 'स्व' नहीं होता, कोई सीमा नहीं होती।</p>
<p>40 And - briefly, I must stop - the brain now is full of information, cluttered up, there is no space in it, and one must have space, there must be space. Space means energy; when there is no space your energy is very very limited. And the brain - the speaker is not a specialist on the brain, though he has talked about it a great deal with other scientists and so on - not that that's a recommendation - they experiment on animals, on theories, on the accumulation of knowledge; but we are not scientists, we are laymen, ordinary people, humble, wanting to find out. There is a meditation which is not determined, put into a mould - I won't go into it. So the brain, which is now so heavily laden with knowledge, with theories, with power, position, all the rest of it, everlastingly in conflict and (chatter? clutter?), which has no space. And freedom, complete freedom, is to have that limitless space. The brain is extraordinarily capable, infinite capacity, but we have made it so small and petty.</p>	<p>मस्तिष्क तो अब जानकारी से ठसाठस भरा हुआ है, इसमें कोई जगह बची नहीं है, और हमारे पास यह जगह, यह अवकाश होना ही चाहिए। अवकाश का अर्थ है ऊर्जा; जब कोई अवकाश नहीं होता तो आपकी ऊर्जा बहुत सीमित हो जाती है। अब तक मस्तिष्क संचित ज्ञान से सिद्धांतों से, शक्ति एवं पद-प्रतिष्ठा से इस बुरी तरह बोझिल है तथा यह इतना सतत द्वंद्व में है कि इसके पास कोई अवकाश नहीं है। स्वतंत्रता यानी समग्र मुक्ति का अर्थ है उस असीम अवकाश की उपलब्धि। हमारा मस्तिष्क असाधारण रूप से समर्थ है, इसके पास असीम क्षमता है, परंतु हमने इसे क्षुद्र और छोटा बना लिया है।</p>
<p>So when there is that space and emptiness and therefore immense energy - energy is passion, love and compassion and intelligence - then there is that truth which is most holy, most sacred; that which man [has] sought from time immemorial. And that truth doesn't lie in any temple, any mosque, in any church. And it has no path to it except through one's own</p>	<p>अतः जब वह अवकाश एवं रिक्तता है और इसलिए असीम ऊर्जा - ऊर्जा यानी उत्कटता, प्रेम, करुणा तथा प्रज्ञा तो उस सत्य का आविर्भाव होता है जो अति पवित्र और पावन है तथा जिसकी खोज मनुष्य अनादि काल से करता रहा है। उस सत्य का वास किसी मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर में नहीं है। और इस सत्य तक पहुँचने के लिए कोई मार्ग नहीं है,</p>

understanding of oneself, inquiring, studying, learning. Then there is that which is eternal.	सिवाय इसके कि हम स्वयं को समझें - स्वयं की जाँच-पड़ताल करते हुए, स्वयं का अध्ययन करते हुए, तथा स्वयं के बारे में सीखते हुए। तभी यह प्रकट होता है जो शाश्वत है।
	वाशिंगटन, डी. सी.
	२१ अप्रैल, १९८५

	विलक्षण प्रकाश
21 9th Across the river, smoke was going up in a straight column; it was a simple movement bursting into the sky. There wasn't a breath of air; there wasn't a ripple on the river and every leaf was still; the parrots were the only noisy movement as they flashed by. Even the little fisherman's boat did not disturb the water; everything seemed to have frozen in stillness, except the smoke. Even though it was going so straight up in the sky there was a certain gaiety in it and freedom of total action. And beyond the village and the smoke was the glowing sky of the evening. It had been a cool day and the sky had been open and there was the light of a thousand winters; it was short, penetrating and expansive; it went with you everywhere, it wouldn't leave you. Like perfume, it was in the most unexpected places; it seemed to have entered into the most secret corners of one's being. It was a light that left no shadow and every shadow lost its depth; because of it, all substance lost its density; it was as though you looked through everything, through the trees on the other side of the wall, through your own self. Your self was as opaque as the sky and as open. It was intense and to be with it was to be passionate, not the passion of feeling or desire, but a passion that would never wither or die. It was a strange light, it exposed everything and made vulnerable, and what had no protection was love. You couldn't be what you were, you were burnt out, without leaving any ashes and unexpectedly there was not a thing but that light.	नदी के उस पार, धुआँ सीधे स्तम्भों में उपर जा रहा था; वह आसमान में फट पड़ने वाली एक सहज गति थी। वहाँ हवा की साँस तक नहीं थी; नदी में एक लहर नहीं थी और हर एक पत्ती निश्चल थी; केवल तोते ही शोर करते गुजर रहे थे। उस छोटे मछुए की नाव ने भी पानी को हिलाया नहीं, हर कुछ मानो निश्चलता में जम गया था सिवाय वह धुआँ। वह इतना सीधा ऊपर आसमान में जा रहा था फिर भी उसमें एक प्रकार की प्रसन्नता और समग्र क्रिया की उन्मुक्तता थी। और देहात और धुएँ के पास संध्या का प्रदीप्त आकाश था। दिन ठंडा था, और आसमान भी खुला था और वहाँ हजारों शीत ऋतुओं का प्रकाश था; वह अल्पकालीन, भेदक और व्यापक था; वह सब जगह आपके साथ जाता था, वह आपसे कभी विदा नहीं होता। सुगंध की तरह वह सबसे अनपेक्षित जगहों में था; मानो वह किसी के अस्तित्व के सबसे गोपनीय कोनों में पैठ गया था। वह प्रकाश था जो जरा सी भी छाया नहीं छोड़ता था और हर परछाई अपनी गहराई खो बैठी थी; उसकी वजह से हर चीज ने अपना घनत्व खो दिया था; मानो आप हर चीज के आरपार देख रहे थे, दीवार के उस तरफ वाले पेड़ों के आर-पार, आपके अपने आर-पार। आप खुद आकाश जितने ही अपारदर्शी थे और खुले भी। वह तीव्र था और उसके साथ होना अनुरागी था, संवेदना या कामना की वासना नहीं, बल्कि वह जो कभी मुरझाती नहीं, मरती नहीं। वह एक विलक्षण प्रकाश था, उसने सब कुछ खोल कर रख दिया था और भेद्य बना दिया था, और जिसे संरक्षण नहीं था वह प्रेम था। आप जो थे वह नहीं हो सकते थे, आप जल चुके थे, बिना राख हुए और अनपेक्षित ही वहाँ कुछ भी नहीं था सिवाय उस प्रकाश के।
	राजघाट, वाराणसी

६ जनवरी, १९६२  
(कृष्णमूर्तिज् नोटबुक से अनूदित)

समयातीत समय

The moon was quite young yet it gave enough light for shadows; there were plenty of shadows and they were very still. Along that narrow path, every shadow seemed to be alive, whispering amongst themselves, every shadowy leaf chattering to its neighbour. The shape of the leaf and the heavy trunk were clear on the ground and the river down below was of silver; it was wide, silent and there was a deep current which left no mark on the surface. Even the afternoon breeze had died and there were no clouds to gather around the setting sun; higher up in the sky, there was a solitary rose-coloured whisper of a cloud that remained motionless till it disappeared into the night. Every tamarind and mango was withdrawing for the night and all the birds were silent, taking shelter, deep among the leaves. A little owl was sitting on the telegraph wire and just when you were below it, it flew off on those extraordinary silent wings. After delivering milk, the cycles were coming back, the empty tins rattling; there were so many of them, single or in groups, but for all their chatter and noise that peculiar silence of the open country and immense sky remained. That evening nothing could disturb it, not even a goods train crossing the steel bridge. There is a little path to the right wandering among the green fields and as you walk on it, far away from everything, from faces, tears, suddenly, you are aware that something is taking place. You know it is not imagination, desire, taking to some fancy or to some forgotten experience or the revival of some pleasure and hope; you know well it is none of these things; you have been through this examination before and you brush all these aside, swiftly with a gesture and you are aware something is taking place. It is as unexpected as that big bull that comes through the darkening evening; it is there with insistency and immensity, that otherness, which no word or symbol can catch; it is there filling the sky and the earth and

चांद अभी काफी कमसिन था फिर भी परछाइयों के लिए पर्याप्त रोशनी दे रहा था; वहां बहुत सारी परछाइयां थी और वे सब बहुत निश्चल थी। उस संकीर्ण रास्ते की लंबाई में प्रत्येक परछाई सजीव लग रही थी एक दूसरे से फुसफुसाते हुए, हर एक पत्ती की परछाई अपने पड़ोसी के साथ बकबक करती हुई। पत्ती और भारी तने का आकार जमीन पर साफ नजर आ रहा था और नीचे की ओर नदी चांदी की लग रही थी; वह चौड़ी थी, मौन थी और वहां गहराई में एक प्रवाह था जो ऊपरी पृष्ठ पर कोई चिन्ह नहीं छोड़ता था। अपरान्ह की हवा शांत हो चुकी थी और डूबते सूरज के इर्द-गिर्द इकट्ठा होने के लिए कुछ बादल भी वहां नहीं थे; आसमान में कुछ और ऊंचाई पर सरसराहट थी, गुलाबी रंग के एक मात्र बादल की जो रात में गायब होने तक अचल रहा। इमली और आम का प्रत्येक पेड़ रात सोने जा रहा था और सभी पक्षी मौन थे, पत्तियों में आश्रय लेते हुए। एक छोटा सा उल्लू टेलीफोन के तार पर बैठा हुआ था और जैसे आप उसके नीचे थे, उसने उन असाधारण मौन पंखों से उड़ान भरी। दूध के वितरण के बाद, साइकिलें लौट रही थी, उनके खाली डिब्बे खड़खड़ा रहे थे; वहां पर वे इतने सारे थे, अकेले या समूहों में लेकिन उनकी बकबक और शोरगुल के बावजूद वह खुले प्रदेश और अमित आकाश का विलक्षण मौन बना रहा। उस शाम को कुछ भी उसे भंग नहीं कर सकता था, लोहे के पुल को पार करती मालगाड़ी भी नहीं। दाहिनी तरफ हरे-भरे खेतों में भटकनेवाला एक दूर छोटा सा पथ है और जैसे आप उसपर चलते हैं, हर चीज से बहुत दूर, चेहरों, आंसुओं से दूर, अचानक आप सजग हो उठते हैं कि कुछ हो रहा है। आप जानते हैं कि वह कल्पना, अभिलाषा, किसी मोह या भूली हुई अनुभूति में फंस जाना या किसी सुख और आशा का पुनरुज्जीवन नहीं है; आप अच्छी तरह से जानते हैं कि वह इनमें से कुछ भी नहीं है; इस जांच-पड़ताल से आप पहले ही गुजर चुके हैं और आप इन सबको तत्काल इशारे से अलग हटा देते हैं और आपको बोध होता है कि कुछ हो रहा है। वह उतना ही अनपेक्षित है जितना की वह बड़ा सांड जो धुंधलाती शाम में से आता है; वह वहां पर है, आग्रह और अमितत्व के साथ, वह अन्यत्व, जिसे कोई शब्द या प्रतीक नहीं पकड़ सकते; वह वहां है, आकाश और पृथ्वी और उसमें की हर छोटी चीज़ में भर जाता हुआ। आप और वह छोटा

<p>every little thing in it. You and that little villager who without a word, passes you by, are of it. At that timeless time, only there is that immensity, neither thought nor feeling and the brain utterly quiet. All meditative sensitivity is over, only that incredible purity is there. It is the purity of strength, impenetrable and unapproachable but it was there. Everything stood still, there was no movement, no stir and even the sound of the whistle of the train was in the stillness. It accompanied you as you walked back to your room and it was there, too, for it had never left you.</p>	<p>ग्रामवासी जो बिना कुछ कहे आपके पास से गुजरता है, उसी के हैं। उस समयातीत समय में, केवल वह अमितत्व है, न विचार और न भावना, और मस्तिष्क बिलकुल शांत। ध्यान की संवेदनशीलता खत्म हो चुकी है, केवल वह अविश्वसनीय शुद्धता वहां पर है। वह ताकत की शुद्धता है, अभेद्य और अगम्य, लेकिन वह वहां थी। सब कुछ निश्चल था, वहां किसी प्रकार की गति नहीं थी, हलचल नहीं थी और गाड़ी की सीटी की आवाज भी उस निश्चलता में थी। जैसे आप अपने कमरे की ओर लौट पड़े, वह आपके साथ-साथ थी और वह वहां पर भी थी, क्योंकि उसने कभी आपको छोड़ा ही नहीं था।</p>
	<p>राजघाट, वाराणसी १४ जनवरी, १९६२</p>
	<p>(कृष्णमूर्तिज् नोटबुक से अनूदित)</p>